सरोकार, संवेदना व संवादधर्मिता के लेखक थे प्रेमचंद -से. रा. यात्री

हिंदी विश्वविद्यालय के साहित्य विद्यापीठ में प्रेमचंद जयंती समारोह का आयोजन

वर्धा दि. 29 जुलाई 2011: प्रेमचंद ने अपने समय की सामाजिक समस्याओं को ग्रहण किया था। उनके पास व्यापक दृष्टि थी। वे सामाजिक समस्याओं को जिस रूप से महसूस करते थे, वैसे ही लिखते थे। उनकी रचनाएं कुएं से निकले शुध्द पानी जैसी पाक और साफ है। उनकी रचनाओं में सरोकार, संवेदना और संवादधर्मिता है। उक्त उदबोधन वरिष्ठ कथाकार तथा विश्वविद्यालय के अतिथि लेखक से. रा. यात्री ने प्रेमचंद जयंती के उपलक्ष्य में साहित्य विद्यापीठ में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

विश्वविद्यालय के साहित्य विद्यापीठ में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठता प्रो. सूरज पालीवाल प्रमुखता से उपस्थित थे। से. रा. यात्री ने प्रेमचंद के समय का जिक्र करते हुए कहा कि प्रेमचंद ने 75 वर्ष पूर्व जिस लखनऊ और बनारस के बारे में लिखा था उस लखनऊ और बनारस की दुनिया आज के परिप्रेक्ष्य में पूरी तरह बदल चूकी है। ऐसा होते हुए भी साहित्य रचना के संदर्भ में प्रेमचंद अपनी जगह पर खडे दिखते है। प्रेमचंद के समय में जो सामाजिक समस्याएं थी, उन्हें उजागर करने के लिए उन्होंने अपनी लेखनी का बखूबी इस्तेमाल किया। सामाजिक समस्याओं पर उनके जैसा सार्थक हस्तक्षेप आज तक नहीं हो पाया है। आम आदमी ही उनके समग्र रचना संसार के केंद्र में था। वे और उनके समकालीन निराला, महादेवी वर्मा और माखनलाल चतुर्वेदी जैसे लेखक आदमी से जुड़ाव रखने वाले थे। परंतु आजादी के बाद हमारे सरोकार संकुचित हो गये, हमारी दुनिया भी छोटी हो गयी और संवाद बंद हो गये, इसलिए प्रेमचंद की गोदान जैसी कालजयी रचना हमारे समय में सामने नहीं आ रही है।

इस अवसर पर साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता तथा सुविख्यात आलोचक प्रो. सूरज पालीवाल ने प्रेमचंद के पात्रों का जिक्र करते हुए कहा कि 1936 के दौर में प्रेमचंद ने जो लिखा उससे उनकी भविष्य के प्रति जो व्यापक दृष्टि थी वह प्ररिलक्षित होती है। उन्होंने न केवल किसानों को संगठित होने की बात कही बल्कि स्त्री पात्रों को निडर और साहसी बनाया और उनमें विवेक जगाया, इसलिए उनके स्त्री चरित्र आज के समय के स्त्री रचित्रों से प्रभावी लगते हैं। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद की रचनाएं 75 वर्ष के बाद भी कालजयी है। इस अवसर पर नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. रवि चतुर्वेदी, साहित्य विद्यापीठ के सहायक प्रोफेसर डॉ. उमेश कुमार सिंह, डॉ. सुनील कुमार सुमन, तथा छात्रों ने भी चर्चा में हिस्सा लेकर प्रेमचंद के साहित्य पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन साहित्य

विद्यापीठ के प्रो. के. के. सिंह ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन साहित्य विद्यापीठ के सहायक प्रोफेसर डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी ने किया। कार्यक्रम में अध्यापक, कर्मी एवं छात्र बडी संख्या में उपस्थित थे।

बी एस मिरगे

जनसंपर्क अधिकारी

पोष्ट - मानस मंदिर, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

Post- Manas Mandir, Gandhi Hills, Wardha-442001 (Maharashtra), INDIA

Ph./Fax: (07152) 252651 ई-मेल/**E-mail: bsmirgae@gmail.com**, वेबसाईट/**Website:** www.hindivishwa.org